Paper - V [1769-1859]
Group - A

Q. भूगोल में हम्बोल्ट के योगदान का वर्णन करें?
1769-1859 A.D.

हम्बोल्ट का जन्म बर्लिन में तात्कालिक शाही परिवार में हुआ। बचपन से ही उसकी रुचि भ्रमण एवं विविध विषयों पर ज्ञानार्जन में रही। अठारह वर्ष तक उसका प्राथमिक शिक्षा घर पर ही हुआ। इनका बचपन माँ की देख रेख में बिता। उच्च शिक्षा के लिए जर्मनी, फ्रैंकफर्ट विश्वविद्यालय गये। अपनी पढ़ाई पुरी करने के बाद 1791 में उसकी सर्वप्रथम नियुक्ति खनिज विभाग में हुई। यहाँ अपने पद का लाभ उठाते हुए उसने आधी जर्मनी की विस्तृत यात्रा की। इस यात्रा काल में वह प्रसिद्ध भूगोल एवं ~~भूगर्भ~~ भू-विज्ञान वेत्ता गोथे व श्लेटर के भी सम्पर्क में आया। 1797 में अपनी माँ की मृत्यु के पश्चात उसने उपर्युक्त राजकीय सेवा पद से त्याग किया।

30 वर्षों तक जर्मनी से बाहर रहने के पश्चात रिटर ने विशेष प्रयास एवं जर्मनी के शासक के निमंत्रण पर 1827 में वह पुनः जर्मन लौटे। यहाँ उनकी नियुक्ति राजा के सलाहकार (अटेची) के रूप में हुई। उसका यह पद मंत्री स्तर का था। हम्बोल्ट ने अपने जीवन के अन्तिम 20 वर्ष यहीं बिताये। यहीं वह रिटर के सम्पर्क में भी आए दोनों विद्वानों के बिच निरंतर सम्पर्क रहने से भौगोलिक चिन्तन एवं दर्शन के विकास को महत्वपूर्ण दिशा मिली।

हम्बोल्ट को वर्तमान भूगोल (Modern Geography) का पर्वतक और संस्थापक माना जाता है। वह बहुमुखी प्रतिभा का धनी विद्वान था, जिसने भू-आकृति विज्ञान, जलवायु विज्ञान, वनस्पति भूगोल, मानचित्रकला, शरीर रचना इत्यादि अनेक क्षेत्रों को अपने लेखों और ग्रन्थों में संग्रह किया।

भ्रमण :→ हम्बोल्ट ने वानलास्टर के साथ द० अमेरिका तथा अन्य देशों का पाँच वर्षों तक भ्रमण करते हुए 64000 K.m की यात्रा पुरी की इसने द० अमेरिका के उत्तरी भाग, पूर्व से पश्चिम तट, आमेजन बेसिन और एण्डिज की चोटी तक गये। क्यूबा, मेक्सिको और मध्य अमेरिका भी गये उष्ण कटिबंधीय वनस्पति पर उनका लेख प्रकाशित हुआ फ्रांस से लौटकर उन्होंने — "Society Geography की स्थापना की। वहा से नये दुनिया की अनुभव प्रकाशित किये, जो भूगोल, वनस्पति और मौसम विज्ञान की आवश्यक नीधि है। उन्होंने अमेरिका और आमेजन नदियों के प्रवाह क्षेत्र की खोज की। उसने वेलेन्सिया झील के सुखने के कारण निकटवर्ती क्षेत्रों में वनस्पति का नष्ट होना बताया।

हम्बोल्ट ने Climolometer से पृथ्वी के देशान्तर रेखाओं को दर्शाया। बैरोमीटर से ऊँचाई नापी। ~~वह~~ आमेजन, ओरोनी का 200 से अधिक खगोलीय केन्द्र स्थापित किये गये। उनका मानचित्र बनाकर लोगों के आदत पर लेख लिखे। आर्थिक तथा राजनैतिक लेखों को इकट्ठा किया। फ्रांस ~~में~~ रहने के समय उनका सम्बंध लाप्लास वार्नर आदि विद्वानों से सम्पर्क हुआ और उनका बौद्धिक विकास हुआ। 1829 ई० में रूसी सरकार के आग्रह पर यूराल के

धात्विक क्षेत्र का दौरा किया और 1843 ई०में Asia Central नामक पुस्तक लिखी। रूस से लौटते समय वनिस के राजा के सलाह पर कार (अटेची) बने और वहीं पर Cosmos नामक पुस्तक लिखा और पाँच खण्डों में विभक्त किया

वैज्ञानिक के रूप में हम्बोल्ट की ख्याति भ्रमण करता के रूप में हुई, क्योंकि उनकी सभी रचनाएं भ्रमण में लिखे गये हैं। भूगोल एवं उनसे सम्बंधित विषय पर उनकी निम्नलिखित अनेक रचनाएं हैं—

1. राइन लौण्ड के शाल्ट —(1789)
2. प्राकृतिक दिग्दर्शन — (1847)
3. Asia Central —(1829)
4. प्राकृति दिग्दर्शन — (1847)
5. स्थलीय प्रदेश के अनुभव (1815–1820)
6. अमेरिका के रूप वेक्षण
7. मैक्सिको एवं क्यूबा के प्रादेशिक वर्णन
8. कासमस (Cosmos)

हम्बोल्ट ने सात संकल्पनाओं को विश्व के सामने रखा, जिसका भूगोल के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा :—

(1) मानव विकास के रूप में :—

(2) भूगोल विश्व के स्थानीय विक विभिन्नता का विज्ञान है :— भूगोल का मूल-भूत आधार क्षेत्रीय तथा स्थानीय विभिन्नता की संकल्पना है। यही विज्ञान क्रमबद्ध अन्य विज्ञानों में भूगोल को स्वतंत्र स्थान मिलता है।

(3) सामान्य भूगोल ही भौतिक भूगोल है :— हम्बोल्ट ने समान भूगोल के स्थान पर भौतिक भूगोल का प्रयोग किया है।

(4) भूगोल सम्बंधों का भूगोल है :— भूगोल में जैव-अजैव मानव और प्रकृति के सम्बंधों का अन्वेषण करना भूगोल वेत्ता का कर्तव्य है।

(5) सांसारिक दृश्य घटनाओं का समग्र :— उन्होंने दृश्य घटनाओं का विवेचन और अध्ययन द्वारा अनुसंधान को सबसे ऊँचा स्थान दिया।

(6) भूगोल में दृश्य घटनाओं का विश्व वेत्ता :— हम्बोल्ट ने कहा है कि अन्य क्रमबद्ध विज्ञानों में समरूपता होती है जबकि भूगोल में विषमता है।

(7) प्रकृति की एकता :— हम्बोल्ट ने कहा कि प्रकृति में एकता होती है लेकिन ~~विवि~~ विविधता में रहती है।

अन्त में कह सकते हैं कि —यद्यपि हम्बोल्ट प्रध्यापक नहीं थे; लेकिन इनके विचार धारा उनकी रचनाओं में समान्य रूप से प्रकाशित होती है। इन्होंने भूगोल के विभिन्न पक्षों विभिन्न विज्ञान के गहराईयों में सोचते रहते थे। इनके चिन्तन प्रारम्भ बहुमुखी वास्तविक व्यवहारिक एवं विस्तृत आधार युक्त रहा।

कार्ल रिटर का विचार धारा :- रिटर पर हम्बोल्ट का काफी प्रभाव पड़ा लेकिन उन्होंने अपना स्वतंत्र चिन्तन किया उनके मुख्य विचार धारा निम्नलिखित है।

(I) ईश्वर वादी विचार धारा :- रिटर का मानना है कि पृथ्वी की रचना ईश्वर ने ही की है एवं मानव के शिक्षण एवं पोषण के लिये भूमि के रूप में दिया। हर महाद्वीप की आकृति ईश्वर ने दी।

(II) मानव स्वरूप :— मनुष्य के दृष्टि से उन्होंने प्रदेशों का अध्ययन किया पृथ्वी और मनुष्य में घनिष्ट सम्बंध बताया — The Country works upoun its People and the people upoun the people.

(III) धरातलीय विभाजन :- अपनी प्रादेशिक अध्ययन की योजना को लागू करने के लिये उनके अर्द्ध कुण्डे में वर्णित वृहत धरातलीय या लक्षणीय इकाईयों अर्थात महाद्वीपों के व्यवस्थित अध्ययन हेतु सर्व प्रथम उन्होंने भौगोलिक लक्षणों के आधार पर प्रारम्भिक स्तर पर विभाजन करना विशेष महत्वपूर्ण माना। अतः इन्होंने विभिन्न भौतिक स्वरूपों में -पर्वत, पठार, मैदान, मध्यवर्ती क्षेत्र इन चार इकाइयों को सम्मिलित किया। ऐसी प्रत्येक धरातल वर्णन, भूमि का स्वरूप, जल प्रवाह, जलवायु, मुख्य उपज, जनसंख्या, एवं एतिहासिक घटनाओं को ध्यान में रखा।

(IV) मानचित्र विधि का उपयोग :— रिटर द्वारा आधुनिक भूगोल पर लिखा गया प्रथम ग्रन्थ यूरोप का भूगोल से सम्बंधित मानचित्र मुख्य ग्रन्थ के प्रकाशन के तीन वर्ष बाद 1807 में प्रकाशित हुआ। इन मानचित्र में भौतिक एवं सांस्कृतिक तत्वों का यूरोपीय भूतल पर चित्रण किया गया। यूरोप में स्वयं रिटर ने भ्रमण किया।

अतः रिटर ने भूगोल को क्रमिक अध्ययन की रूप रेखा दी। उन्होंने पूर्ण क्षेत्र की जैविक क्रिया का वर्णन, महाद्वीपों का प्राकृतिक चित्रण तथा अन्य तथ्यों पर संगठित इकाई के रूप में प्रस्तुत करके भूगोल का उद्देश्य समझाया।

आलोचना :— रिटर के विचार धारा में बहुमुखी विवादस्पद वर्णन मिलते हैं। नये संसोधन और शोध के क्रम में वे भूल में उन्होंने पहले कहा कि स्थिरवाद उनकी बहुरूपी विधि विचार आलोचना के पात्र बन गये। लोगों ने उन्हें आराम कुर्सी भूगोलवेत्ता माना जो ईश्वरीय शक्ति पर ज्यादा विश्वास करते थे।

उपसंहार

हम अन्त में रिटर के भौगोलिक विचार धारा को देखते हुऐ कह सकते हैं कि वे भूगोल अधिष्टता एवं निर्माण कर्ता थे। 18वी शदी जो भौगोलिक विचारधारा विद्यमान थे उनके विचार धारा को संगठित करके भौगोलिक रूप दिया अनुभविक तुलनात्मक विधियों को स्थापित करके मानव के सम्बंधो की विधि बतायी।

Unit – I

भूगोल में कार्ल रिटर का योगदान / विचार धारा ?

1779 To 1960

कार्ल रिटर को आधुनिक भूगोल की नीव के पत्थर या भवन के स्तम्भ कह सकते हैं। रिटर बचपन से ही प्राकृति प्रेमी थे। 19 वीं शताब्दी के अन्त में प्रत्यक्ष विश्वास से हम्बोल्ट की अपेक्षा रिटर का योगदान अधिक था क्योंकि वे पुरे काल विश्वविख्यात से सम्मिलित रहे। रिटर बर्लिन में 40 वर्ष तक प्राध्यापक रहे। जर्मनी, फ्रांस एवं अन्य यूरोपीय देशों में फैले उनके शिष्यों ने उनके भौगोलिक चिन्तन को बहुत अधिक फैलाया। उनके चिंतन में पृथ्वी की एकता, प्रादेशिक एकता एवं नियतिवाद का विचार धारा काफी महत्व रहा। रिटर का निधन पर 28 मई 1960 को रायल भूगोल सोसाइटी (Royal Geographical Soiety) लन्दन के अध्यक्ष ने विभिन्न प्रकार से श्रद्धांजलि अर्पित की:- the labour of Carl Ritter are characterised by great industry.

शिक्षा यात्रा एवं अध्ययन :- 1779 ई०में जर्मनी ने जन्में कार्ल रिटर की शिक्षा प्रकृति सौन्दर्य में हुआ। वे रूसो और पेस्टालोजी (Pestalozzi) दर्शन से प्रभावित थे। जहाँ विद्यार्थियों को देहातों में प्रकृतिक के बीच में भ्रमण कराया जाता है। बाद में वे लेही विश्वविद्यालय में गये और फ्रेंकफर्ट में धनी परिवार से सम्बंधित होकर पश्चिमी क्षेत्रों की यात्रा की थी। इन्होनें यूरोप के इतिहास और भूगोल पर दो ग्रन्थ लिखें। सांख्यिकी की आधार पर यूरोप के 6 मानचित्र बनाये। 1806 ई० में विधि तंत्र पर आधारित प्राकृतिक भूगोल पर घटनाओं पर आधारित New Geography नामक पुस्तक लिखी। वर्ष 1819 में उनका प्रसिद्ध पुस्तक 'अर्द्ध कुण्डे' (ERD KUNDE) का प्रथम खण्ड प्रकाशित हुआ उन्होनें अपने जीवन काल में कई रचनाएं लिखि जिसमे प्रमुख हैं :—

(i) यूरोप का ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं सांख्यिकीय अध्ययन (1804)
(ii) यूरोप का धरातलीय, प्राकृतिक एवं आर्थिक संसाधनों का 6 मानचित्र (1807)
(iii) New Geography (1810) (इनकी यह रचना अप्रकाशित रही)
(iv) विधि तंत्र पर भौगोलिक पत्रिका में प्रकाशित कई शोध पत्र
(v) अर्द्ध कुण्डे (प्रथम खण्ड अफ्रिका पर, द्वितिय एशिया पर और तृतिय पूरे विश्व पर)

(iii) यूरोप के ऐतिहासिक एवं भौगोलिक परिवेश पर तैयार की गयी एटलस (1894)
(iv) फ्रांस का भूगोल (Geographie de la France) (1903)
(v) पूर्वी फ्रांस का भूगोल (France de la Est) (1917)
(vi) 'मानव भूगोल' मृत्यु के पश्चात (1923)
(vii) 'सामाजिक तथ्यों की भौगोलिक दशाएं' (1902)

ब्लाश का सम्भववादी चिन्तन :- ब्लाश की मान्यता है कि वह अपने परिवेश (environment) का उपयोग स्वयं के अनुभव एवं विकास के स्तर के आधार पर करता है। मानव अपनी क्षमता एवं आवश्यकतानुसार उनका उपयोग कर सकता है। मानव का जहाँ प्रवाहित जल, कटावयुक्त मिट्टी, वृक्ष आदि परिवेश के कुछ तत्वों पर नियंत्रण नहीं है परन्तु कुछ अन्यों पर उसका नियंत्रण है। पर्यावरण में पीढ़ी दर पीढ़ी चलते आ रहे सामूहिक प्रयास के परिणामस्वरूप प्रत्येक क्षेत्र में निवास करने वाला मानव समुदाय सामाजिक और आर्थिक जीवन की एक विशिष्ट अनूठी पद्धति विकसीत कर लेता है। इस जीवन पद्धति को ब्लाश ने 'जेनेरे-डी-वाई' का नाम दिया।

ब्लाश की प्रदेशों की संकल्पना :- "ऐसा क्षेत्र जिसमें भौतिक और सांस्कृतिक तथ्यों की समरूपता पाई जाती है" मानव समाज, पौधे और पशु जगत के समान ही विभिन्न तत्वों से निर्मित है जो पर्यावरण के द्वारा प्रभावित रहते हैं। यह कोई नहीं जानता कि कौन सी हवा दोनों को एक साथ लाई, परन्तु वे एक प्रदेश विशेष में एक दूसरे के साथ रहे और उन पर उस प्रदेश के पर्यावरण की छाप पड़ी कुछ समाज अपने पर्यावरण का लम्बे समय से अंग रहे हैं जबकि कुछ समाज अभी निर्माण की अवस्था में हैं और दिन पर दिन परिवर्तित हो रहा है।

उक्त पंक्ति से स्पष्ट होता है कि ब्लाश ने "क्षेत्रिय सम्पूर्णता" (Terrestrial whole) के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया उनका विश्वास था कि पृथ्वी और उसके निवासी अन्योन्य सम्बंधों में निकटता से बंधे हुए हैं और कोई एक सही रूप में उसके समस्त सम्बंधों में दूसरे के बिना प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है।

Q. भूगोल में विडाल डी ला ब्लॉश के योगदान का वर्णन करें ?

ब्लास का जन्म फ्रांस के पेरिस शहर में सन 1845 में हुआ था। ये फ्रांस के नवीन भूगोल के विकास की नींव डालने वाले एक मात्र भूगोलवेत्ता थे। वह सम्भववाद (Possibilism) का कट्टर विरोधी थे इन्हें मानव भूगोल का जन्म दाता कहा जाता है। इन्होंने इतिहास, भूगोल, दर्शन विषय की स्नातक की पढ़ाई Ecole Normale के विख्यात संस्थान से पास की। उन्होंने Ph.D. के शोध हेतु प्लेटो से टॉलमी के काल तक की उपलब्धियों का अध्ययन करने के लिए यूनान गये। ब्लाश ने Ph.D. की उपाधि Ecole Normale से प्राप्त की। ब्लाश ने नेन्सी विश्वविद्यालय में भूगोल के व्याख्याता पद ग्रहण की। इन्होंने यहा 5 वर्षों तक पढ़ाने का कार्य किया। इसके बाद वे जर्मनी चले गये। वहाँ रिटर, हम्बोल्ट, रेटजेल के कार्यों का अध्ययन किया एवं रिचथोफेन से भेंट की। ब्लाश नेन्सी में रहते हुए प्रादेशिक भूगोल पर "La France De Est" नामक ग्रन्थ लिखि। जर्मनी से लौटने के पश्चात 1877 में इनकी नियुक्ति Ecole Normale शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थान पेरिस में हुई। 1898 में इन्हें पदोन्नति कर सोरबान विश्वविद्याल, पेरिस में भूगोल विभाग के प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष पद पर हुई। भूगोल को नई उचाई तक पहुचाने के प्रयास हेतु उन्हें "Chair of Geography' का सम्मान दिया गया। इसी दौरान ब्लाश ने फ्रांस का दौरा किया एवं उसका प्रादेशिक विभाजन किया। ब्लाश एक माने हुए प्रवक्ता थे उनकी भाषा शैली सरल एवं प्रभाव शाली थी। वे जहाँ भी गये अपनी स्थायी छाप छोड़ते गये। ब्लाश भूगोल में निश्चय वाद का विरोध करते हुऐ संभाववाद का समर्थन किया। वर्ष 1918 में इनकी मृत्यु हो गयी

ब्लाश का भूगोल को देन :-

ब्लाश ने भूगोल पर अनेक शोध पत्र एवं कई ग्रन्थ लिखे। उनकी भाषा शैली सरल और प्रभावशाली रही। वह एक माने हुऐ प्रवक्ता थे यही कारण है कि वह जहाँ गये अपनी स्थाई छाप छोड आए। इनकी प्रमुख रचनाएं निम्न हैं:-

(i) - वर्ष 1894 में भूगोल की वार्षिक पत्रिका 'Annals-de-Geographie' का प्रकाशन करते रहे। इसमें भूगोल की सभी शाखाओं, भू-विज्ञान, खनिज विज्ञान, ऐतिहासिक भूगोल आदि पर चिन्तन एवं उदाहरण सहित खोज कार्यों आदि का विवेचना विस्तार से किया गया।

(ii) यूरोप में राष्ट्र राज्य (1889)